Q भारत में भक्ति आन्दोलन के कारण एवं स्वरूप पर प्रकाश डालें ?

Ans:- तुर्क-अफगानकालीन भारत के धार्मिक जीवन की प्रमुख विशेषता है- भक्ति आन्दोलन का उदय। इस काल में अनेक संतो एवं सूफियों का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने धर्म को आडंबर विहीन करने एवं ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति जगाने का कार्य किया। इस युग के संतो ने जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य किये, वे थे, हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य समन्वय एवं एकता स्थापित करने का प्रयास एवं सामाजिक और धार्मिक तनाव को कम करने की चेष्टा करना। अपने प्रयासों में वे सफल भी हुए।

भक्ति आंदोलन का विकास दो चरणों में हुआ। पहला चरण 7वीं से 13वीं शताब्दी तक चला, जब दक्षिण भारत में इसका आरम्भ हुआ। दूसरा चरण 13वीं से 16वीं शताब्दी के मध्य विकसित हुआ। उत्तरी भारत में यह आंदोलन अपने दूसरे चरण में इस्लाम के सम्पर्क में आया और "उसकी चुनौतियों को स्वीकार करता हुआ, उससे प्रभावित, उत्तेजित और आंदोलित हुआ।"

➢ भक्ति- आंदोलन के कारण :-

[1.] भक्ति मार्ग का बढ़ता महत्व :- भक्ति आन्दोलन के प्रारंभ के समय तक जैन और बौद्ध धर्म की अवनति हो चुकी थी। ब्राह्मण धर्म में शैव और वैष्णव सम्प्रदाय ही प्रमुख बन गये थे, परंतु इनमें भी आडंबर और अंधविश्वास

का समावेश हो चुका था। इसी समय 13वीं शताब्दी में उत्तरी भारत में इस्लाम धर्म का प्रचार हुआ। इस्लाम धर्म की सरलता से प्रभावित होकर ब्राह्मण धर्म को भी सरल और ग्राह्य बनाने का प्रयास किया गया।

प्राचीन काल में भी धार्मिक आडंबरों से क्षुब्ध होकर लोगों ने ज्ञान मार्ग, कर्म-मार्ग एवं भक्ति मार्ग का सहारा लिया था। बौद्ध धर्म और भागवत-सम्प्रदाय ने भक्ति-मार्ग का सहारा लिया था, जिससे आम जनता काफी प्रभावित हुई थी। आठवीं शताब्दी में कुमारिल-भट्ट एवं शंकराचार्य ने पुनः ज्ञान-मार्ग को 'मोक्ष'-प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग बताया।

इन संतों धर्मसुधार के अतिरिक्त सामाजिक सुधारों की तरह भी ध्यान दिया।

2.] आंदोलन पर इस्लाम का प्रभाव :-

इस्लाम से भक्ति आन्दोलन किस हद तक प्रभावित हुआ इस पर विभिन्न इतिहासकारों की अपनी-2 मान्यता है। प्रो॰ ए॰एल॰ श्रीवास्तव का विचार है कि सल्तनत काल में सुल्तानों ने हिन्दुओं के प्रति जो धार्मिक असहिष्णुता की नीति अपनायी, मंदिरों का विनाश किया उसके कारण हिन्दु धर्म में एक नई विचारधारा का जन्म हुआ। अब बाह्य धार्मिक आडंबरों के स्थान पर (मंदिर, मूर्ति, पूजा, यज्ञ इत्यादि) ईश्वर के प्रति भक्ति और प्रेम प्रकट करने की भावना का उदय हुआ।

कुछ अन्य इतिहासकारों का मानना है कि भक्ति आंदोलन इस्लाम

की सहजता एवं रचनात्मक से अधिक प्रभावित हुआ। इस्लाम के एकेश्वरवादी स्वरूप, समानता एवं बंधुत्व की भावना से हिंदू धर्म सुधारक भी प्रभावित हुए और उनलोगों ने भी बाह्य आंडबरों का त्याग कर एक ईश्वर की भक्ति पर बल दिया।

(5.) पतनोन्मुख हिंदू समाज :- भक्ति मार्ग भारतीय धर्म और दर्शन के लिये नया नहीं था। इसकी झलक उपनिषदों में ही पाई जाती है। वस्तुस्थिति यह है कि 13 वीं शताब्दी तक भारतीय धर्म और समाज पतन की चरम सीमा तक पहुँच चुका था। यह सांस्कृतिक - धार्मिक संकट का काल था। इसे बचाने के लिए इसमें सुधार की आवश्यकता थी। इसलिये धर्म सुधारकों ने बाह्य आंडबरों का त्याग कर ईश्वर की भक्ति और प्रेम पर बल प्रदान किया। इस्लाम के ही समान हिंदू धर्म को भी सशक्त बनाने की आवश्यकता आ पड़ी।

अतः इस्लाम ने हिंदू सुधारकों को अपनी धार्मिक - सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने पर मजबूर कर दिया। फलतः मध्यकाल में भक्ति आंदोलन विराट जन आंदोलन के रूप में प्रकट हुआ।

> भक्ति आंदोलन का स्वरूप :- उत्तरी भारत में भक्ति - आंदोलन का तीव्र गति से प्रसार हुआ। संतों के एक नये वर्ग ने "एक और भक्ति के आधारभूत तत्वों के बीच सामंजस्य तथा सद्भाव स्थापित किया और

दूसरी ओर मानवीय रहस्यवादी धारणाओं और सूफी-साधना की रहस्यवादी धारणाओं के बीच सामंजस्य की सृष्टि की।" फलस्वरूप शीघ्र ही भक्ति आंदोलन जन-आंदोलन के रूप में परिणत हो गया। इन संतों ने किसी नए धर्म की स्थापना नहीं की, बल्कि प्रचलित धार्मिक एवं सामाजिक कुरीतियों को दूर किया एवं हिन्दू समाज के सभी वर्गों में समानता और सद्भावना स्थापित की। वे धार्मिक रूढ़ियों, कर्मकांडों, यज्ञ, पूजा, बलि, तप आदि में विश्वास नहीं रखते थे, बल्कि एकेश्वरवाद के समर्थक थे।

वे यह भी मानते थे कि मनुष्य जिस प्रकार, अपने आत्मीय जनों से प्रेम करता है, उसी प्रकार का प्रेम वह ईश्वर से भी कर सकता है, जिसके अनेक रूप हो सकते हैं। भक्ति की चरम सीमा में उसका ईश्वर-प्रेम उसी प्रकार का हो जाता है, जिस प्रकार प्रेमी और प्रेमिका के मध्य होता है। दोनों के मध्य अन्य किसी की भी गुंजाइश नहीं रहती है। भक्ति मार्ग में गुरु का अत्यधिक महत्व था। (गुरु भक्ति-मार्ग) धार्मिक संतों ने दोहों, कविताओं एवं गीतों के माध्यम से अपना संदेश जनसाधारण तक पहुँचाया।